* उपनिषद या वेदान्त *

[1] उपनिषद को "वेदान्त" भी कहा जाता है। जिसका अर्थ है वेदों का अन्त

[2] उपनिषद आर्यों का दार्शनिक ग्रंथ था जिसकी रचना 600 BC के आस-पास प्रारम्भ हुई।

(3) उपनिषद का शाब्दिक अर्थ है
उप - समीप, निष्ठापूर्वक
षद - बैठना
अर्थात - गुरु निकट, निष्ठापूर्वक (रहस्य ज्ञान के लिए) बैठना इस प्रकार उपनिषद वह साहित्य है जिसमें रहस्यात्मक ज्ञान एवं सिद्धान्त का संकलन

[4] उपनिषद में आत्मा एवं परमात्मा का विषद वर्णन मिलता है। उपनिषद की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा है। विश्व की आत्मा में अपनी आत्मा में मिलाना अर्थात अपनी आत्मा को परमात्मा से मिलाना

[5] उपनिषद ज्ञान का मार्ग है। उपनिषद में कर्मकाण्ड की जगह तप पर ध्यान दिया गया है और ज्ञान को श्रेष्ठ माना गया है।

[6] मुण्डकोपनिषद में 108 उपनिषदों का उल्लेख मिलता है जबकि शंकराचार्य ने केवल 10 उपनिषदों पर अपना भाष्य (टिका) लिखा था। कुछ प्रमुख उपनिषद का नाम इस प्रकार - ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, तैतरीय, एतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक इत्यादि

[7] उपनिषद को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है।
प्रथम वर्ग - एतरेय, तैत्तिरेय, बृहदारण्यक छान्दोग्य एवं केन इनकी रचना बुद्ध से पूर्व हुई थी
द्वितीय वर्ग कठ, ईश, मुण्डक, प्रश्न, श्वेताश्वतर इत्यादी इनकी रचना भी बुद्ध से पूर्व हुई थी लेकिन ये स्वतंत्र रूप से मिलती है
तृतीय वर्ग मैत्रायणि और और माण्डुक्य इनकी रचना बुद्ध के पूर्व हुई थी

Scanned by TapScanner

नोट :— (I) भारत का आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।
(II) उपनिषद में बहुदेववाद के स्थान पर "पर ब्रह्म" को प्रतिपादित किया गया है।
(III) छान्दोग्य उपनिषद में "सर्व खल्विदं ब्रह्म" अर्थात ब्रह्म ही सब कुछ है। कहकर अद्वैतवाद की प्रतिष्ठता की गयी है।

✱ वेदांग ✱

[1] वैदिक वाक्यों या वेदों को सही ढंग से समझने के लिए वेदांग की रचना की गयी ताकी वेदों का अर्थ सरलता से समझा जा सके एवं वैदिक क्रम, काण्डा में सहायता मील सके इसकी संख्या 6 है

[A] शिक्षा (I) वैदिक वाक्य के सही उच्चारण के लिए शिक्षा का निर्माण किया गया

(II) शिक्षा को वेदरूपी पुरुष की "नाक" कहा जाता है।

(III) स्वर अथवा वर्ण से हीन मंत्र मिथ्या प्रयुक्त होने के कारण सही अर्थ का प्रतिपादन नही हो सकता अपितु वह वाग्वज्र बनकर यजमान का ही नाश कर देता है। यह उदाहरण "पाणिनिय" शिक्षा में मिलता है।

(IV) वैदिक शिक्षा सम्बन्धि प्राचीनतम साहित्य प्रतिशाख्य है। इसी के आधार पर कलान्तर में पाणिनियन शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा, नारद शिक्षा इत्यादी कई ग्रंथो की रचना है

[B] व्याकरण (I) व्याकरण की रचना शुद्ध-शुद्ध पढ़ने व लिखने के लिए हुई है।

(II) शब्दो की मिमांसा करने वाले शास्त्र को व्याकरण कहा गया है। इसका सम्बन्ध भाषा सम्बन्धि समस्त नियमों से है।

(III) व्याकरण को वेदरूपी पुरुष का मुख बतलाया गया है।

(IV) भारत की प्रथम व्याकरण की पुस्तक

पाणिनी कृत "अष्टाध्यायी" है जिसकी रचना पांचवी शताब्दी ई॰ पूर्व में की गई थी इसमें आठ अध्याय और लगभग 4000 सूत्र है। यह संस्कृत की अनुपम पुस्तक है।

(V) ईशा पूर्व 4 थी शताब्दी में कात्यायन ने संस्कृत के प्रयुक्त होने वाले नये शब्द को व्याख्या करने वाली वार्तिक कि रचना की।

(VI) ईशा पूर्व 2 सरी शताब्दी में अष्टाध्यायी पर टिका लिखा गया है। जिसका नाम महाभाष्य है जो पंतजली द्वारा लिखी गई थी।

(VII) सातवी शताब्दी में जयादित्य और वामन द्वारा अष्टाध्यायी पर काशिका नामक टीका लिखी गयी थी।

Scanned by TapScanner

(c) कल्प – वैदिक विधि-विधानों को पूरा करने के लिए कुछ सूत्रों की रचना की गई जिन्हें सम्मिलित रूप से कल्प सूत्र कहा जाता है यह तीन खण्डों में विभक्त है।—

(i) श्रौत सूत्र – इस सूत्र में यज्ञ वेदी और स्थल कुण्ड आदि निर्माण का वर्णन मिलता है। यहीं से भारत में ज्यामिती एवं बीजगणित का विकास होता है।

(ii) गृह्य सूत्र → गृहस्थ जीवन का विधि-विधान एवं संस्कारों का वर्णन इसमें मिलता है।

(iii) धर्म सूत्र – इसमें मनुष्य के सामाजिक धार्मिक एवं पारलौकिक कर्तव्यों का वर्णन मिलता है।

नोट – श्रौत सूत्र गृह्य सूत्र एवं धर्म सूत्र को सम्मलित रूप से कल्प सूत्र कहा जाता है।

नोट – सूत्र काल भारत में 600 BC – 300 BC के मध्य था

(D) निरुक्त (i) वैदिक वाक्यों की उत्पत्ती निरुक्त में मिलती है।

(ii) वेदों के कठिन शब्दों का संकलन – "निघंटु" नामक ग्रंथ में हुआ है इन्हीं की व्याख्या करने के लिए यास्क ने "निरुक्त" की रचना की थी।

नोट – निरुक्त की रचना ई० पू० पांचवी सदी में यास्क के द्वारा की गई थी

(E) छन्द या छन्दशास्त्र → (i) वैदिक मंत्र अधिकांशतः छन्दों में बद्ध है अतः उनके ठीक ढंग से उच्चारण तथा पाठ के लिए छन्दों का ज्ञान आवश्यक है।

(ii) पाणिनीय शिक्षा में छन्दों को "वेदों का पैर" बतलाया गया है।

(iii) छन्द शास्त्र पर स्वतंत्र ग्रन्थ पिंगल मुनी का "छन्द सूत्र" है

(F) ज्योतिष → (i) यज्ञों से अधिक फल प्राप्त करने के लिए यह आवश्यकता थी की उनका अनुष्ठान शुभ समय तथा मुहूर्त में

Scanned by TapScanner

में किया जाय ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिती का अध्ययन करके यह समयज्ञान किया जाता था इस अध्ययन ने ज्योतिष नामक वेदांग का जन्म दिया

(ii) ज्योतिष की सबसे प्राचीन ग्रन्थ माध्व मुनिका "वेदांग ज्योतिष" है इसमें कुल मीलाकर 44 श्लोक है।

(iii) वेदांग ज्योतिष के दो ग्रंथ है जो ऋगवेद एवं यजुर्वेद से सम्बन्धित है। जिन्हे क्रमश: आचार्य ज्योतिष तथा या याजुष ज्योतिष कहा जाता है

नोट वेदांग ज्योतिष भारतीय ज्योतिष शास्त्र का आधार है

नोट सूत्र साहित्य के बाद स्मृतीयों की रचना हुई उन स्मृतीयों के नाम इस प्रकार है।

(i) मनुस्मृती सबसे प्राचीन स्मृती है। 200 BC 200 AD

(ii) याज्ञवाल्क्य स्मृती 100 AD to 300 AD

(iii) नारद स्मृती - 300 AD to 400 AD

(iv) पराशर स्मृती · 300 AD to 500 AD.

(v) बृहस्पती स्मृती - 300 AD to 500 AD.

(vi) कात्यायन स्मृती - 400 AD to 600 AD.

स्मृती

महाकाव्य महाकाव्य से तात्पर्य रामायण एवं महाभारत से है। वैदिक साहित्य के बाद रामायण एवं महाभारत दो प्राचीनतम ग्रंथ है। भारत के सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य में इन दो महाकाव्यों का अत्यंत आदरणीय स्थान है। इनके अध्ययन से हमें प्राचीन हिन्दु संस्कृती के विभिन्न पक्षों का सुन्दर ज्ञान प्राप्त हो जाता है इन महाकाव्यों द्वारा आदर्श तथा मूल्य सार्वभौम मान्यता रखते है। रामायण हमारा आदिकाव्य है जीसकी रचना महर्षि वाल्मीकी ने की थी। इसने हमें हिन्दुओं तथा यवनो (युनानी) और शको के संघर्ष का विवरण

प्राप्त होता है।

महाभारत की रचना वेद व्यास ने की थी इसके शक, यवन, कुषाण आदि जातियों का वर्णन इसमें मिलता है इसके द्वारा प्राचीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक का परिचय मिलता है राज्य और शासन के विषय में यह ग्रंथ बहुमूल्य सामग्रीयों का भंडार है।

रामायण की रचना महाभारत से पहले हुई थी क्योंकी महाभारत में रामायण एवं बाल्मीकी की चर्चा मिलती है

महाभारत

महाभारत महर्षि वेद व्यास द्वारा रचीत है प्रारम्भ में इसके श्लोको की संख्या (8800) थी और उस समय उसका नाम जय संहिता था। जय संहिता का अर्थ होता है विजय सम्बन्धि संग्रह ग्रंथ बाद में चलकर इसके श्लोको की संख्या 24 हजार हो गई और इसका नाम भारत पड़ गया कालान्तर में इसके श्लोकों की संख्या (एक लाख) हो गई और इसका नाम सहस्त्र संहिता या महाभारत हो गया

महाभारत में वर्णित कौरव पाण्डव युद्ध 950 BC के आस पास लड़ी गई थी

महाभारत के 18 पर्व है जिनके नाम इस प्रकार है।

(I) आदि पर्व
(II) सभापर्व
(III) वन पर्व
(IV) विराट पर्व
(V) उद्योग पर्व
(VI) भीष्म पर्व
(VI) द्रोण पर्व
(VII) कर्ण पर्व
(IX) शल्य पर्व
(X) सौप्तिक पर्व
(XI) स्त्रीपर्व
(XII) शान्ती पर्व
(XIII) अनुशासन पर्व
(XIV) अश्वमेध पर्व
(XV) आश्रमवासी पर्व
(XVI) मौसल पर्व
(XVII) महाप्रस्थानीक पर्व
(XVIII) स्वर्गारोहण पर्व

Scanned by TapScanner

नोट - महाभारत का रचना काल 400 BC से 400 AD माना गया है

(ii) महाभारत को इतिहास कहा जाता है जबकी रामायण को आदी ग्रंथ कहा जाता है

रामायण

वाल्मिकि द्वारा संस्कृत में रची रामायण में कुल रूप से 6000 श्लोक थे पुर्ण रूप से बाद में श्लोको की संख्या 12000 हो गई और आगे चलकर श्लोकों की संख्या 24000 हो गई यही कारण है कि इसे चतुर्विस्तो शास्त्री संहिता भी कहा जाता है

रामायण अभी तक पाच अवस्थाएं गुजर चुका है और इनकी अवस्था 1200 ई० में आई थी।

रामायण के सात काण्ड है

(i) बाल काण्ड (ii) अयोध्या काण्ड
(iii) आरण्यक काण्ड
(iv) किस्किन्धा काण्ड
(v) सुन्दरकाण्ड
(vi) लंका काण्ड या युध्द काण्ड
(vii) उत्तर काण्ड।

नोट> रामायण की रचना काल 400 BC में प्रारम्भ होती है लेकिन रामायण की रचना महाभारत के बाद पूर्ण हो पाती है।

☆ नोट - रामायण का भारत से बाहर सर्वप्रथम अनुवाद चीन में किया गया था।

पुराण

(I) भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा एंव क्रमबद्ध आख्यान पुराणों में मिलता है पुराणों का आगमन ईसा पूर्व पांचवी शताब्दी में हो चुका था पुराणों के अन्तीम रूप से संकलन तीसरी एंव चौथी शताब्दी में हुआ था।

* नोट > अर्थववेद के चारों वेदों के बाद पुराण का उल्लेख हुआ है। जो किसी ग्रन्थविशेष का नहीं बल्की ग्रंथ का बोधक है।

(II) पुराणों के अनेक चन्द्रवंशी एंव सूर्य वंशी राजाओं का विवरण मिलता है जीससे तत्कालीक आर्थीक सामाजीक एंव सासंकृतीक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।

* नोट ① महाभारत के वक्ता लोम हर्षण के पुत्र उग्रश्रवा पुराणों के ज्ञाता थे अर्थात पुराणों के रचयीता उग्रश्रवा माने जाते है।

* नोट ② सर्व प्रथम Pargiter (पार्जिटर) महोदय ने पुराणों की ऐतिहासिक महत्व की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था।

(III) अमर कोष में पुराणों के पांच विषय बताए गये है।

— (i) सर्ग अथवा जगत सृष्टी
(ii) प्रती सर्ग - प्रलय के बाद जगत की पुनः सृष्टी
(iii) वंश ऋषियों एंव देवताओं की वंशावली
(iv) मन्वन्तर — महायुग
(v) वंशानुचरीत - प्राचीन राजकुलों का इतिहास

(IV) पुराणों की संख्या 18 है लेकिन इसमें से केवल पांच में (वायु पुराण, विष्णु पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, मत्स्य पुराण एंव भागवत पुराण) में ही राजाओं की वंशावली पायी जाती है।

Scanned by TapScanner

** नोट (i) सबसे प्राचीन पुराण मत्स्य पुराण है।

* (ii) [illegible] नामक विद्वान ने सौ उप पुराणों की सूची दी है।

* (iii) (a) विष्णु पुराण → इससे मौर्य काल के बारे में जानकारी मिलती है।

* (b) मत्स्य पुराण – इससे सातवाहन काल के बारे में मिलती है

* (c) वायु पुराण – इससे गुप्त काल के विषय में जानकारी मिलती है।

साहित्यिक स्रोत

- धार्मिक ग्रंथ
  - ब्राह्मण ग्रंथ
    - श्रुती
      - चारो वेद
      - ब्राह्मण
      - आरण्यक
      - उपनिषद
      - वेदांग
    - स्मृति
      - महाभारत
      - रामायण
      - पुराण
  - अब्राह्मण ग्रंथ
    - बौद्ध ग्रंथ
    - जैन ग्रंथ
- अधार्मिक ग्रंथ

आर्य लोग
1500 BC to 600 BC

- 1500 BC to 1000 BC
  - ऋग्वेद
- 1000 BC to 600 BC
  - सामवेद
  - यजुर्वेद
  - अथर्ववेद

Scanned by TapScanner